रामगोपाल की “फूँक”

ये शोध का विषय है कि रामगोपाल वर्मा एक हिट फिल्म देने के बाद दूसरी हिट फिल्म तक कितनी फ्लॅाप फिल्में बनाते हैं । पिछली हिट फिल्म उनकी कौन सी थी ये शायद उनको भी नहीं मालूम होगा । उनका काम तो फैक्ट्री का उत्पादन बढाना है । हॉरर फिल्में बनाने का उनका शौक काफी पुराना है । “रात” से “फूँक” तक उन्होंने कई हॉरर फिल्में बनाई हैं । आज स्थिति ये है कि अगर किसी परिचित से पूछिये कि रामगोपाल वर्मा की फिल्म देखने चलोगे तो वह हाथ जोड़ लेगा । हॉरर फिल्म की बात करेंगे तो आदमी थर–थर कांपने लगेगा । कहेगा “यार अनजाने में कोई गलती हो गई है तो माफ कर दो । जूते मारने का दिल कर रहा हो तो वो कसर भी पूरी कर लो पर 3 घंटे अंधेरे में बैठ कर बेसिर–पैर की पिक्चर देखने को मत कहो ।”

“फूँक” रिलीज होने के पहले रामू का स्टेटमेंट आया कि इस फिल्म का रात का शो कोई आदमी हॉल में अकेले बैठ कर नहीं देख सकता है । जो देखेगा उसको ईनाम दिया जायेगा । रामू गलत नहीं कह रहे थे । उनको पहले से मालूम था कि मैटिनि शौ तक तो पूरे शहर की ऑडियंस इस फिल्म को देख चुकी होगी । रात के शो के लिए एक आदमी भी नहीं बचेगा । ईनाम का पैसा भी बच जायेगा और पब्लिसिटी भी हो जायेगी ।

फिल्म का नाम क्या सोच कर “फूंक” रखा गया मेरी समझ में नहीं आया । पूरी फिल्म में किसी करेक्टर ने “फूँ” तक नहीं की उल्टा पब्लिक के पैसे फुंक गये । हॉरर फिल्म का तमगा लगा था तो माना गया कि फिल्म में एक अदद भूत या चुड़ैल तो होगी ही । पर अब लगता है कि भूतों और चुड़ैलों ने भी रामगोपाल की फिल्म में काम करने से मना कर दिया है । इस फिल्म में एक महिला करेक्टर है ‘मधु’ । फिल्म में मैडम मधु ने सारे भूत–प्रतों की कमी पूरी दी । जो कुछ है बस उनकी हँसी है, और कुछ नहीं है । उनकी हँसी से खुश हो कर चाहे पब्लिक हंस ले या फिर डर ले ।

अचानक एक दिन रामू को काले जादू के बारे में पता लगा (शायद डिस्कवरी पर देखा होगा) । तभी से उन्होंने पक्का कर लिया कि पब्लिक को काले जादू के बारे में बतायेंगे । अरे यार हम लोग भी डिस्कवरी देखते हैं, तुमने कायको 4–5 करोड़ फिल्म बनाने में फूंक दिये । फिल्म तैयार हो गई तो ये हुआ कि नाम क्या रखा जाये । फिल्म देख कर ही रामू को पता चल गया था कि कई करोड़ बेवजह फुंक गये हैं । इसलिए उसने फिल्म का नाम “फूंक” रखा है । यानी की मैरे तो पैसे फुंक ही गये अब पब्लिक के भी फुंक जायें तो मेरी भटकती आत्मा को कुछ शांति मिले ।

भई रामू पैसे देकर पब्लिक टिकट खरदती है तो इसलिए कि कुछ तो डर–वर लगना चाहिए लेकिन तुम्हारी फिल्मों में तो पैसे भी पल्ले से जाते हैं और डरना भी मना होता है । यार हॉरर फिल्म में आडियंस को डराना भी जरूरी होता है । ऐसे ही फिल्में बनाओगे तो तुम्हारी फिल्में देखना आगे से हम भी जरूरी नहीं समझेगें ।